“राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मानवीय अस्मिता : एक अध्ययन”

राँची विश्वविद्यालय, राँची से पीएच० डी० उपाधि हेतु
प्रस्तावित शोध प्रबंध की रूपरेखा

मानविकी संकाय

हिन्दी विभाग
2023

<u>शोध निर्देशिका</u>

डॉ० मंजु लाल
सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग
डोरण्डा महाविद्यालय, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

<u>शोधार्थी</u>

कुर्शीला मनोनित कुजूर
मो0 नं. : 9102944689

''राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मानवीय अस्मिता : एक अध्ययन''

1. प्रस्तावना :

उपन्यास शब्द का अर्थ होता है– सामने रखना। उपन्यास में मानव जीवन का समस्त चित्रण किया जाता है। इनमें अनेक प्रासंगिक कथाओं और घटनाओं का वर्णन किया जाता है। अतः हम सीधे तौर पर यह भी कह सकते हैं कि उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है। उपन्यास के द्वारा ही मानव के चरित्र पर प्रकाश डाला जा सकता है एवं उसके रहस्यों को खोला जा सकता है। ठीक उसी प्रकार राजेन्द्र यादव भी अपने उपन्यासों में जो भी विषय–वस्तु प्रस्तुत किए हैं उन्हीं के माध्यम से वे सम्पूर्ण मानव जीवन के चरित्र पर प्रकाश डालते हुए मानवीय जीवन के रहस्यों को सामने लाने की कोशिश करते नजर आते हैं।

उपन्यास का मुख्य स्रोत अति प्राचीन काल से चली आ रही कथा एवं कहानियाँ है। जिसका जन्म मनुष्य की कौतूहल वृत्ति को शांत करने के लिए हुआ है। अभी का जो समय है उसमें बौद्धिकता ने मनुष्य की कौतूहल वृत्ति को कम किया है। अतः आज वे ही कथा कहानियाँ समाज में प्रचलित हैं, जिनके पीछे बौद्धिक धरातल है जिसकी झलक हमें राजेन्द्र यादव जी के उपन्यासों में देखने को मिलता है।

आजादी के बाद युवा कथाकारों में राजेन्द्र यादव जी का नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है। ऐसे बहुआयामी प्रतिभा के धनी उपन्यासकार राजेन्द्र यादव जी का जन्म 28 अगस्त 1929 ई0 को उत्तर प्रदेश के आगरा में हुआ था और मृत्यु 28 अक्टूबर 2013 को हुआ।

राजेन्द्र यादव हिन्दी के उन लेखकों में से हैं, जिन्होंने लेखन को स्वतंत्र पेशे के रूप में अपनाया है। राजेन्द्र यादव जी का कहानी, उपन्यास, समीक्षा, चिंतन तथा संपादन में अपना एक अलग ही पहचान है। कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से उनकी रचनाएँ व्यंजित है जिसके कारण उनकी पहचान यथार्थवादी

सशक्त रचनाकार के रूप में हिन्दी कथा परम्परा में अपनी विशिष्ट रचना एवं शिल्पगत नवीनता से परिपूर्ण है।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य को नया मोड़ देकर उसे वास्तविक जीवन से जोड़ने वालों में राजेन्द्र यादव का नाम शीर्षस्थ है। 'सारा आकाश' उपन्यास से लेकर 'मंत्रविद्ध' तक की अपनी उपन्यास यात्रा में राजेन्द्र यादव ने समाज एवं व्यक्ति की स्थितियों, गतिविधियों एवं विशेषताओं को परिभाषित करते हुए बाहरी तथा भीतरी रूप का चप्पा–चप्पा छान लिया है। आभावों वेदनाओं और सुख–दुःख से भरे मध्यवर्गीय जीवन सफर को शब्दबद्ध करने वाले राजेन्द्र यादव समाज तथा व्यक्ति की उन तमाम चुनौतियों को अपनी लेखकीय दृष्टि से स्पर्श करते हुए व्यक्ति, समाज की पीड़ा एवं कुण्ठाओं को सामने लाने का प्रयास किया है।

प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कथा साहित्य का रिश्ता ग्रामीण जीवन से तो प्रायः अलग हुआ ही साथ ही साथ मध्यवर्गीय समाज में भी वह सहज विश्वसनीय नहीं हो पाया। ऐसे समय में उसे फिर से विश्सनीय बनाने का कार्य जिन लेखकों ने किया उनमें राजेन्द्र यादव अग्रणी हैं।

राजेन्द्र यादव जी का पहला उपन्यास 'सारा आकाश' जिसका प्रकाशन 1959 में हुआ। पहले यह उपन्यास 'प्रेत बोलते हैं' के नाम से था जिसका प्रकाशनवर्ष 1951 था बाद में उसका नाम बदलकर राजेन्द्र यादव ने 'सारा आकाश' रखा। इस उपन्यास में राजेन्द्र यादव ने संयुक्त परिवार में कलह का कारण पुरानी पीढ़ी और युवा पीढ़ी के विचारों को बताया है जिससे परिवार की शांति समाप्त हो जाती है। समर और प्रभा इस उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं।

राजेन्द्र यादव जी का अगला उपन्यास 'उखड़े हुए लोग' (1956) में उन लोगों का चित्रण किया गया है जिन्होंने आजादी के बाद हुए राजनीति पतन तथा शोषण का दंश झेला। उच्चवर्ग द्वारा किए जाने वाले निम्न तथा मध्यवर्ग के शोषण पर तीखा व्यंग्य है। वैसे देखा जाय तो वर्तमान समय में भी

राजनीति, समाज एवं अर्थव्यवस्था में मध्यवर्गीय लोग उखड़े हुए हैं। इस उपन्यास में इसी व्यवस्था को चरितार्थ किया गया है।

तीसरा उपन्यास है 'कुलटा' जिसका प्रकाशन वर्ष 1958 है। इस उपन्यास में उच्चवर्गीय दम्पति जीवन में उत्पन्न संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास की नारी पात्र है मिसेज तेजपाल जो मेजर तेजपाल की पत्नि है। वह अपने पति के कैद के खिलाफ विद्रोह करती है। अपना अस्तित्व बनाए रखती है। देखा जाय तो यह उपन्यास संघर्ष और द्वंद्व से भरा पड़ा है।

राजेन्द्र यादव जी का चौथा उपन्यास 'शाह और मात' (1959) उपन्यास के दो पात्र हैं उदय और सुजाता जिनके माध्यम से लेखक उनकी मानसिक स्थितियों का चित्रण प्रस्तुत करते हुए उदय की समस्याओं को सामने लाने का प्रयास किया है चूँकि उदय लेखन के प्रति ईमानदार रहता है जिसके कारण उसके सामने अनेक समस्याएँ आती हैं।

राजेन्द्र यादव और मन्नू भण्डारी दोनों ने मिलकर 'एक इंच मुस्कान' (1963) की रचना की है। इस उपन्यास में मध्यवर्गीय लेखक की पराजय और खण्डित व्यक्तित्व का चित्रण किया गया है। प्रमुख पात्र अमर एवं रंजना है जिनका विवाह तनावग्रस्त हो जाता है अमर अपना पतित्व खो बैठता है। वह अपने को पूर्ण स्वतंत्र करते हुए अपने लेखन के प्रति एकनिष्ठता का परिचय देता है।

राजेन्द्र यादव का छठा उपन्यास है 'अनदेखे अनजान पुल' (1963) इस उपन्यास का प्रधान पात्र निन्नी मध्यवर्गीय परिवार की लड़की है। निन्नी अपनी कुरूपता के कारण अपने आपको हर खुशियों से वंचित पाती है। निन्नी उन लड़कियों में से है जो आभाव में जीते हुए भी जीवन में आगे बढ़ने का प्रयत्न करती है।

सातवाँ उपन्यास है 'मंत्रविद्ध' (1967) उपन्यास के प्रधान पात्र तारक दत्त और सुरजीत कौर की असफल प्रेम कहानी है। इस उपन्यास में यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार से तारक जैसे पुरूषों की वजह से सुरजीत कौर जैसी

स्वाभिमानी स्त्रियों की बलि चढ़ा दी जाती है चूँकि तारक एक गैर जिम्मेदार एवं शंकालू प्रवृत्ति का पुरूष है।

मेरा यह जो शोध विषय है अभी तक मैंने जिन मूल ग्रंथों को दिखाया है उसके द्वारा यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य के माध्यम से ही समाज में उपस्थित व्यक्ति की विभिन्न गतिविधियों को सामने लाया जा सकता है।

2. शोध की प्रासंगिकता :

राजेन्द्र यादव के उपन्यास साहित्य जगत में जितनी प्रासंगिक है सामाजिक अध्ययन की दृष्टि से भी वे एक प्रबुद्ध सचेत रचनाकार के कलम से निकले अपने समय का प्रमाणिक दस्तावेज भी है। उपन्यास वस्तु में वे स्थितियों, पात्रों एवं भाषा का स्वतंत्रता पूर्वक प्रयोग करते हैं खासकर उनके उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ की कई कारक हमें दिखाई देते हैं। जैसे स्त्री–पुरूष के सम्बधों के प्रति नवीन दृष्टिकोण मध्यवर्गीय जीवन संघर्ष की अभिव्यक्ति, महत्वकांक्षी जीवन के त्रासदी का चित्रण।

3. शोध विषय की उपयोगिता :

राजेन्द्र यादव जीवन और समाज के विभिन्न पहलुओं को अपने उपन्यासों का विषय बनाया है। यादव जी हिन्दी साहित्य जगत में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। वर्तमान समय और समाज से परिचय पाना हो और समकालीन समस्याओं से अवगत होना हो तो राजेन्द्र यादव जी के साहित्य को पढ़ने से यह कार्य सफल हो सकता है। उनका लेखन क्रिया बहुमुखी प्रतिभा से परिपूर्ण है। उनका साहित्य समाज के सभी वर्ग के लिए मार्गदर्शक है। इनकी रचनाएँ चाहे छोटी हो या बड़ी प्रत्येक रचना में उन्होंने मानवीय जीवन से संबंधित अनेक समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है। इनका उपन्यास कई दिशाओं में लाभप्रद एवं लोक मंगलकारी है। इसलिए राजेन्द्र यादव जी के उपन्यास को मैंने अपने शोध का विषय बनाया। वर्तमान समय में मध्यम वर्गीय पारिवारिक संघर्ष, स्त्री–पुरूष संबंध एवं समाज में व्यक्ति की

विभिन्न गतिविधियों को राजेन्द्र यादव जी के उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत करना ही शोध विषय की उपयोगिता एवं सार्थकता को उद्घाटित करता है।

4. साहित्य अवलोकन (पूर्व में किए गए शोध कार्य का अवलोकन)

(1) राजेन्द्र यादव के कथा साहित्य के विविध आयाम, शोधार्थी– भण्डारी एम0एस0।

(2) राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में समाज मनोवैज्ञानिक अध्ययन, शोधार्थी– जार्ज अनीता।

(3) राजेन्द्र यादव के कथा साहित्य में आधुनिक नारी एक विवेचन, शोधार्थी– देशमुख वीरेश उत्तमराव।

(4) राजेन्द्र यादव के उपन्यास में व्यक्ति और समाज शोधार्थी– गिरधारी राधा।

5. शोध की सीमा :

वर्तमान मानव समाज जिस प्रकार मानवीय अस्मिता की खोज करता हुआ समाज और संस्कृति से जूझ रहा है भारतीय इतिहास की एक महान घटना है। स्वतंत्रता की प्राप्ति जिसने न केवल राजनैतिक क्षेत्र में नया मोड़ लाया, बल्कि सामाजिक आर्थिक धार्मिक एवं साहित्यिक क्षेत्रों में भी नई दिशा को उजागर किया है और नई जीवन की समस्याओं को जन्म दिया है। स्वतंत्र भारत के पास एक ओर सपने आशाएँ और आकांक्षाएँ रही है तो दूसरी ओर राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांप्रदायिक, पारिवारिक तथा व्यक्तिगत संबन्धों की समस्या रही है। आजादी के पश्चात् भारतीय समाज पूर्ववर्ती समाज से अलग हो गया जिससे शिक्षा का प्रसार, सुधारवादी आंदोलन, पाश्चात्य संस्कृति से सम्पर्क एवं वैज्ञानिक प्रगति आदि के कारण चारो ओर नैतिकता का ह्रास होकर अनैतिकता भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी और बेइमानी की मनोवृत्तियाँ फैलती गई। हमारे शोध के जरिये राजेन्द्र यादव जो साठोत्तरी भारत की सही तस्वीर प्रस्तुत करने वाले रचनाधर्मी हैं जिन्होंने आजादी के बाद आए बदलाव के सही तस्वीर उकेरी है उनके उपन्यास के माध्यम से मैं स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आए

परिवर्तनों को राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से समाज में निहित कुण्ठा, आक्रोश, संघर्ष को उद्घाटित करूँगी।

6. शोध प्रविधि :

मेरा यह शोध कार्य राजेन्द्र यादव द्वारा लिखित एवं प्रकाशित उपन्यासों पर आधारित होगा। इस शोध कार्य के दौरान विभिन्न पुस्तकालयों एवं पत्र–पत्रिकाओं का अवलोकन किया जाएगा। अपने शोध कार्य के दौरान विभिन्न विद्वानों से राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में निहित तत्वों पर विचार विमर्श कर उनके कथा वस्तुओं और शिल्प की यथार्थ चित्रण करूँगी। मैं अपने इस शोध विषय को पूरा करने के लिए समाजशास्त्रीय, विवरणात्मक एवं विवेचनात्मक दृष्टिकोण अपनाऊँगी। उन युवा वर्ग एवं स्त्री–पुरूष से साक्षात्कार करूँगी और अपने इस शोध विषय को प्रमाणित करने की कोशिश करूँगी जिन्होंने उन उपन्यासों में चित्रित विषय वस्तु से संबंधित तमाम उन परिस्थितियों का सामना किया है। उन लेखकों से भी मिलने का प्रयास करूँगी जिन्होंने अनेक समस्याओं को अपने रचनाओं में शामिल किया है।

इस कार्य के संपादन हेतु मुझे राजेन्द्र यादव के उपन्यासों सहित संबंधित विश्वसनीय तथ्यों सूचनाओं आंकड़ो आदि को संकलित करने एवं अध्ययन पद्धति को स्पष्ट करने हेतु निम्न लिखित शोध प्रविधियों का सहारा लेना पड़ सकता है–

1) सर्वेक्षण विधि
2) साक्षात्कार
3) लेखों आलेखों के अध्ययन से
4) सहायक सामग्री
5) आलोचनात्मक पद्धति
6) पुस्तकावलोन

7. शोध साहित्य की समीक्षा :

हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा में ऐसी अनेक अविस्मरणीय सामाजिक और सांस्कृतिक विशिष्टताएँ सबको अपनी ओर आकृष्ट करती है। राजेन्द्र यादव का सम्पूर्ण कथा साहित्य सामाजिक जीवन से संबंधित अनेक प्रकार की समस्याओं को गंभीरता के साथ प्रस्तुत करता है। पूँजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत वर्तमान सामाजिक ढ़ाँचा भी अनेक विकृतियों असमानताओं और जड़ताओं से भरा हुआ है जिसके फलस्वरूप अनेक समस्याएँ जन–जीवन को को कुण्ठाग्रस्त बनाए हुए है और समाज के स्वस्थ विकास को भी बाधित किए हुए है। नारी समस्या, स्त्री–पुरूष संबंध प्रेम और विवाह संयुक्त परिवारों का विघटन आदि को उन्होंने कथा साहित्य के अन्तर्गत एक व्यापक भूमिका में स्पष्ट किया है। सामाजिक जीवन की गहराई में प्रवेश कर उन्होंने अपनी सजगता एवं प्रगतिशील बोध का परिचय देते हुए मौजूद परिस्थितियों, परम्परागत धारणाओं और मान्यताओं में सामजंस्य ढूढँने का प्रयास किया है, ऐसा सामंजस्य जो व्यक्ति और समाज के भविष्य की रक्षा कर सके। ठीक उसी प्रकार मेरे द्वारा प्रस्तावित यह शोध कार्य ''राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मानवीय अस्मिता : एक अध्ययन'' को सामने लाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। जहाँ तक मुझे मालूम पड़ता है कि मैं यह जो शोध विषय करने जा रही हूँ उस विषय पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है अगर कार्य हुआ भी है तो मैं इसे अपने नजरिये से देखना चाहुँगी।

8. शोध का उद्देश्य :

शोध एक उद्देश्यपूर्ण एवं सुव्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम किसी सैद्धान्तिक अथवा व्यावहारिक समस्या के समाधान को ढूँढ़ने का प्रयास करते हैं। किसी भी शोध का मुख्य उद्देश्य होता तथ्यों की पहचान करना सत्य की खोज करना एवं नवीन ज्ञान की प्राप्ती करना। किसी भी विषय पर शोध करते समय हमेशा हमें नई चीजों को सीखने का मौका मिलता है। शोध एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें हमेशा ही सुधार की गुंजाइश रहती है। ठीक उसी तरह राजेन्द्र

यादव जी के उपन्यासों में भी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक विषय वस्तु के साथ कथाकार की आस्था और उनके उपन्यासों में छुपे रहस्यों को उजागर करना इस शोध का मुख्य उद्देश्य होगा।

इस समय स्त्री–पुरूष सम्बन्धों में कड़वाहट की स्थिति पैदा हो रही है। युवा वर्ग अपने कर्त्तव्य के रास्ते से भटकते नजर आ रहे हैं। देखा जाय तो स्त्रियों को आज भी पहले की तरह पारिवारिक दायित्व का निर्वहन करना पड़ रहा है। स्त्रियाँ अपनी मर्जी से कुछ भी नहीं कर सकतीं इन्हीं तमाम परिस्थितियों को सामने लाते हुए हिन्दी उपन्यासकारों ने समाज एवं व्यक्ति की विभिन्न गतिविधियों को अपने उपन्यासों के माध्यम से समझाने का प्रयास किया है। जिन्हें पढ़कर हम विभिन्न बिन्दुओं को समझ सकते हैं। हमारा यह शोध विषय बदलते हुए स्त्री–पुरूष सम्बन्ध हो या मध्यम पारिवारिक संघर्ष या फिर स्त्री संघर्ष की स्थिति के बारे में हम इन उपन्यासों के माध्यम से दिखाने का प्रयास करेंगे।

9. शोध की प्रेरणा / परिकल्पना :

वर्तमान में देखा जाय तो मानवीय जीवन का लगातार विघटन होता जा रहा है। मैं भी जिस समाज में रह रही हूँ उस समाज में मानवीय मूल्यों को समझने में बड़ी कठिनाई महसूस होती है। इन्हीं तमाम पेरशानियों से जुझते हुए मैं जब एम0 ए0 की परीक्षा उत्तीर्ण की और मैंने यह निश्चत किया कि मुझे अपने या फिर मानवीय जीवन के तमाम परिस्थितियों एवं उलझनों को समझने के लिए राजेन्द्र यादव के उपन्यासों से अच्छा और कोई विकल्प नहीं हो सकता और तभी मैंने राजेन्द्र यादव के उपन्यासों के प्रति अपना ध्यान आकर्षित करती चली गई और यहीं से मुझे शोध कार्य करने के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई। मैंने साहित्य में अनेकों रचनाएँ पढ़ी। उनमें कई लेखक लेखिकाओं के साहित्य ने मुझे प्रभावित किया। राजेन्द्र यादव द्वारा लिखित उपन्यासों के माध्यम से मानवीय व्यथा को समझ लेने के बाद मैं इनकी रचनाओं की ओर उन्मुख हुई। यही कारण है कि उपन्यासों में मेरा लगाव हमेशा से सक्रिय रहा है। इसी क्रम में मैंने राजेन्द्र यादव के सभी उपन्यासों का अध्ययन किया तभी

मैंने निश्चय किया भविष्य में राजेन्द्र यादव की रचनाओं को ही शोध का विषय बनाऊँगी मेरा यह सफल प्रयास रहेगा कि उनके उपन्यासों में अंकित नवीन पहलुओं एवं तथ्यों को प्रकाश में लाऊँ जो भविष्य के लिए एक नवीन दृष्टिकोण की स्थापना होगी।

10. शोध कार्य से ज्ञान में वृद्धि की संभावनाए :

साहित्य समाज का प्रतिबिंब है साहित्य में युग विशेष की सामाजिक मान्यताएँ एवं सांस्कृतिक प्रतिमान प्रतिफलित होते हैं। साहित्य के माध्यम से ही लेखक अपनी अनुभूतियों को पाठकों की अनुभूति से जोड़ लेता है। पाठक के भावों को प्रभावित करता हुआ सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास में योगदान प्रदान करता है। हमारे व्यावहारिक ज्ञान की वृद्धि में हिन्दी साहित्य का अध्ययन बड़ा उपयोगी सिद्ध होता है। हिन्दी साहित्य के पात्र हमारे ही भाँति हँसने रोने वाले सुख–दुःख का अनुभव करने वाले तथा चारित्रिक गुण–दोष लिए होते हैं। अतः इनका उपन्यास साहित्य संघर्षों की एक खुली दास्तान है।

राजेन्द्र यादव जी के उपन्यासों ने पाठकों के मन में विशेष स्थान बनाया है। राजेन्द्र यादव जी के उपन्यास साहित्य पर वैसे तो अनेक शोध कार्य हुए हैं और किए भी जा रहे हैं परन्तु सम्पूर्ण उपन्यासों के वस्तु शिल्प के सम्पूर्ण स्वरूपों का विवेचन निश्चित ही अध्ययन अध्यापन तथा ज्ञान विस्तार में उपयोगी साबित होगा।

11. भविष्य में शोध कार्य होने की संभावनाएँ :

मेरे द्वारा प्रस्तावित यह शोध विषय आने वाली नवीन पीढ़ीयों को शोधकार्य करने में प्रोत्साहित कर सकती है एवं उन्हें एक नवीन दिशा प्रदान कर सकती है। राजेन्द्र यादव जी के उपन्यासों को दृष्टि में रखकर विचार करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि यह हर शोध कार्य के लिए प्रेरणा प्रदान करता है एवं खोज के लिए उत्साहित करता है एवं नवीन दृष्टिकोण से सभी मूल्यांकन को प्रशस्त करता है इसलिए यह एक शोध का विषय बनता ही जाता है।

अध्ययन की सुविधा के अनुसार प्रस्तावित शोध कार्य की योजना –

''राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मानवीय अस्मिता : एक अध्ययन''

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय : राजेन्द्र यादव व्यक्तित्व एवं कृतित्व

क) राजेन्द्र यादव का जीवन परिचय

ख) राजेन्द्र यादव जी की रचनाएँ

ग) राजेन्द्र यादव के पुरस्कार एवं सम्मान

द्वितीय अध्याय : हिन्दी उपन्यास का उद्भव एवं विकास

क) हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद पूर्व उपन्यास

ख) हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद कालीन उपन्यास

ग) हिन्दी साहित्य में प्रेमचंदोत्तर उपन्यास

तृतीय अध्याय : राजेन्द्र यादव जी के उपन्यासों में मानवीय अस्मिता

क) राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता

ख) राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मानव जीवन संघर्ष और पीड़ा

ग) राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मानव जीवन की जीवन शक्ति

चतुर्थ अध्याय : राजेन्द्र यादव जी के उपन्यासों का विषय

क) राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में दलित विमर्श

ख) राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

ग) राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में स्त्री पुरूष संबंध

पंचम अध्याय : राजेन्द्र यादव के उपन्यासों की कला

क) राजेन्द्र यादव के उपन्यासों की भाषा–शैली

ख) राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मुख्य एवं गौण पात्र

ग) राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में संवाद योजना

उपसंहार : विशिष्ट उपन्यासकार राजेन्द्र यादव एक मूल्यांकन

संदर्भ ग्रंथ

क) आधार ग्रंथ सूची

ख) सहायक ग्रंथ सूची

ग) पत्र–पत्रिकाएँ

नोट : आवश्यक होने पर शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन किये जा सकते है।

शोध निर्देशिका

डॉ० मंजु लाल
सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग
डोरण्डा महाविद्यालय, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

कुर्शीला मनोनित कुजूर
मो0 नं. : 9102944689

क) आधार ग्रंथ–सूची

1. 'प्रेत बोलते हैं' राजेन्द्र यादव, प्रगति प्रकाशन, 1951 (बाद में यही उपन्यास राजकमल प्रकाशन द्वारा 1959 में सारा आकाश नाम से प्रकाशित हुआ)
2. 'उखड़े हुए लोग', राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन, 1956
3. 'कुलटा' राजेन्द्र यादव, मसिजीवी प्रकाशन इलाहाबाद, 1958
4. 'शाह और मात' राजेन्द्र यादव, भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली, 1959
5. 'अनदेखे जनजाने पुल' राजेन्द्र यादव, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, 1963
6. 'एक इंच मुस्कान' राजेन्द्र यादव और मन्नू भण्डारी (दोनों साथ में), राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, 1963
7. 'मंत्र–विद्ध' राजेन्द्र यादव, अक्षर प्रकाशन 1967

ख) सहायक ग्रंथ सूची

1. 'हिन्दी उपन्यास में नारी चित्रण', डॉ0 बिन्दु अग्रवाल, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1968
2. 'राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन' अर्जून चौहान, संकेत प्रकाशन, कानपुर, 1992
3. 'औरों के बहाने' राजेन्द्र यादव, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, 1980
4. 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास उद्‌भव और विकास', डॉ0 बेचन, सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली, 1977
5. हिन्दी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग, डॉ0 त्रिभुवन सिंह, हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी, 1973
6. हिन्दी उपन्यास, एक अन्तर्यात्रा– राम दरश मित्र, दिल्ली प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
7. हिन्दी उपन्यास सामाजिक संदर्भ, बालकृष्ण गुप्त

8. आधुनिक हिन्दी उपन्यास और मानवीय अर्थवता, डॉ0 नवल किशोर, दिल्ली, 1977

9. आधुनिक उपन्यास और हिन्दी उपन्यास, डॉ0 इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1973

ग) पत्रिकाएँ

1. 'कथाक्रम' संपादक शैलेन्द्र सागर, प्रकाश पैकेजर्स, 257 गोपालगंज, लखनऊ

2. 'आजकल' संपादक कैलाश दहिया एवं फरहत परवीन